UNIVERSAL LIBRARY
OU_180002
UNIVERSAL LIBRARY

सन् ५७ के ग़दर में

अफ़सरों की चिट्ठियाँ

लेखक—

बेगमों के आँसू, देहली की जाँकनी, बहादुरशाह का मुक़दमा, ग़दर देहली की सुबह-शाम, ग़दर-देहली के अख़बार, गुप्त चिट्ठियाँ आदि आदि ग़दर सम्बन्धी अनेक पुस्तकों के रचयिता

ख़्वाजा हसन निज़ामी साहब

अनुवादक—

श्री० जयनारायण कपूर, बी० ए० एल्-एल्० बी०

प्रकाशक—

नरेन्द्र पब्लिशिङ्ग हाउस

रैन बसेरा :: देहरादून

पहला संस्करण] मार्च, १९३४ [मूल्य चार आने

प्रकाशक—
नरेन्द्र पब्लिशिङ्ग हाउस
रैन बसेरा—देहरादून

मुद्रक
शारदा प्रसाद खरे,
हिन्दी-साहित्य प्रेस, प्रयाग।

अफ़सरों की चिट्ठियाँ

पत्र संख्या १

[जिसे सर हेनरी बर्नार्ड कमाण्डर-इन-चीफ़ ने जॉर्ज कार्निक बार्न्स के नाम (जो सतलज नदी के पश्चिम में अवस्थित रियासतों के कमिश्नर थे) १४ जून, सन् १८५७ ई० को लिखा था]

कैम्प देहली के बाहर

१४ जून, १८५७

मेरे प्यारे बार्न्स,

मैं यहाँ से अभी तक देहली की ओर देख रहा हूँ और हर घड़ी मेरी यह आशा प्रबल होती जाती है, कि हमारी तोपें क़िले के दीवारों की तोपों को ख़ामोश कर सकती हैं और मुझे इस योग्य बना सकती हैं, कि सफलता की बात कुछ आशा रख कर और समीप पहुँचकर इस स्थान पर अधिकार कर लूँ; किन्तु इन विप्लवकारियों के तोपों की भीषणता मुझे निरुत्साह किए देती हैं। यह ठीक है, कि मुझे किसी बात का भय नहीं है; पर इसके अतिरिक्त और कोई चारा नहीं, कि मैं अचानक और भीषण

हमला कर दूँ। पर इन रौशन रातों* में यह काम आसान नहीं मालूम होता।

मैं केवल ६ तोपों का प्रबन्ध कर सका हूँ पर इनके चलाने वाले भी एक बार ही अनुभवहीन हैं। ये हैवान (विप्लवकारी) प्रायः हर रोज़ बाहर निकलते हैं और दो बार तो मैंने इन्हें खासी कमी के साथ वापस भेजा है; लेकिन मेरे सिपाही भी नष्ट होते हैं और इसलिए मुझे इन्हें काफ़ी प्रोत्साहित करना पड़ता है। सच तो यह है, कि ८ वीं तारीख़ से लेकर अब तक कभी ऊपर और कभी नीचे छोटी छोटी लड़ाइयाँ होती ही रहीं। वे आठवीं तारीख़ के बाद से अपनी हानियों का अन्दाज़ा दो हज़ार से अधिक आँकते हैं, किन्तु मुझे सन्देह होता है, कि इसमें वह संख्या भी शामिल हो, जिसका पता ही नहीं लगता।

जब आप घृणात्मक ढङ्ग से देहली के फ़सीलों (क़िले की दीवारों) की चर्चा कर रहे थे, तो मैं नहीं समझ सका कि आख़िर आप लोगों का अभिप्राय क्या था। २४ पाऊण्ड

---

* १८ जून, सन् १८५७ ई० वाले पत्र के नीचे "अचानक और भीषण हमले के सिलसिले में" जो नोट प्रकाशित हैं उससे प्रगट होता है कि "रौशन रातों" का अर्थ वह रातें हैं, जब कि तोप के गोलों का प्रकाश चाँदनी रात का धोखा देता था अतएव "रौशन रातों" का अर्थ "चाँदनी रात" न समझना चाहिए।

अनुवादक

वज़नी गोला फेंकने वाली तोपें विप्लवकारियों के बुर्जों पर हर जगह गड़ी हुई हैं और इनके पीछे लगभग सात हज़ार सिपाही भी मौजूद हैं। ऐसी हालत में, आसानी के साथ प्रवेश नहीं किया जा सकता। मेरे इञ्जीनियर कहते हैं कि हम नियमानुसार खन्दकें खोद कर क़िले तक नहीं पहुँच सकते और मेरे तोपख़ाने वाले भी यह कहते हैं, कि वे इन तोपों को, जो मेरे पास हैं, नहीं चला सकते; अतएव अब मेरे पास केवल एक तदबीर रह गई है और उसकी परीक्षा भी पूरी तरह कर लेना चाहिए। यदि इसमें असफलता हुई तो मेरे पास कोई रक्षक-फ़ौज शेष न बचेगी और यह हमारी तबाही का सूचक होगा। हिन्दोस्तान के लिए कौन सी बात कम हानि पहुँचाने वाली है? या तो सहायक-सेना (सहायता के लिए आने वाली नई फौज) की प्रतीक्षा में समय नष्ट किया जाय अथवा असफलता का जोखिम उठाया जाय?

वे विप्लवकारी अपने दूसरे हमले की तय्यारियाँ कर रहे हैं इसलिए मुझे इस पत्र का यहीं अन्त कर देना चाहिए। श्रीमती बार्न्स से मेरा सलाम कह दें।

आप का सच्चा,

—एच. एच. बर्नार्ड

———

पत्र संख्या २

[जिसे जनरल सर हेनरी बर्नार्ड ने जॉर्ज कार्निक बार्न्स के नाम १७ जून, सन् १८५७ ई० को भेजा था।]

१७ जून, १८५७

मेरे प्यारे बार्न्स,

किसी असाधारण प्रकार के दुष्ट व्यक्ति ने मेरी बरसाती (वाटर-प्रूफ़ कोट) ग़ायब कर दी। यह मेरे पास केवल एक ही थी। हमारे बङ्गले में दो ट्रन्क हैं जो साधारण देवदार की लकड़ी के बने हुए हैं और इनके अन्दर टीन मँढ़ा हुआ है। सब से छोटे में एक बहुत बड़ा भूरे रङ्ग का रेजिमेण्टल कोट रक्खा हुआ है, यदि आप कृपया बक्स खोल कर कोट मेरे पास भेज दें तो आप मेरे साथ बहुत बड़ी नेकी करेंगे।

इस समय हम देहली के सामने पड़े हुए हैं, या जैसा किसी ने हँसी में कहा है, अभी तक हम देहली के पीछे हैं। जो दीवारें (फ़सीलें) मैदान में खड़ी हुई तोपों से उड़ाई जाने वाली थीं, वह १८ पाउण्ड वज़नी गोलों के समक्ष ज्यों की त्यों सुदृढ़ खड़ी हैं। हम महल पर गोलाबारी करते रहते हैं और अभी तक किए जा रहे हैं। 'राइफ़ल्ज़' पल्टन से एक गोरे ने एक हिन्दुस्तानी सिपाही को अपनी बन्दूक़ का निशाना

बनाया और उसकी ८४ मोहरें भी चुरा लीं। मुझे आशा है अङ्गूर विधिवत् पक रहे हैं।*

उन्होंने इस पर कोई हमला नहीं किया और इसलिए मेरा अनुमान है कि वे (विप्लवकारी) आज हमला करेंगे और फिर एक और चपत खायँगे।

हडसन† को ज़ुकाम है और हल्की सी सूजन भी है। लेकिन आज कुछ फ़ायदा है। ग्रेटहेड‡ के लड़के को भी हल्का सा ज्वर हो गया था, किन्तु अब हालत अच्छी है। मरे× के लड़के को, जो चाँदमारी के स्कूल में शिक्षा पा रहा था, अब गाइड में भरती कर दिया गया है।

एक महावत कमसरियट के सन से अच्छे हाथी को बादशाह की सेवा में भेंट देने के लिए कल देहली ले गया था। कर्ज़न ÷

* सम्भवतः इसका अर्थ यह है कि रङ्ग-ढङ्ग वैसे ही हैं जिसकी आशा थी।

† लेफ़्टेनेण्ट डब्लू० एस० आर० हडसन जो बाद में "हडसन्स आफ़ हडसन्ज़ हॉर्स" के नाम से विख्यात हुआ।

‡ लेफ़्टेनेण्ट विलबरफ़ोर्स ग्रेटहेड (इञ्जीनियर)

× लेफ़्टेनेण्ट ए० डब्ल्यू. मरे जो ४२ वीं एन. एल. आई में थे। १४ सितम्बर, सन् १८५७ के धावे में आप मारे गए।

÷ माननीय आर कर्ज़न से अभिप्राय है, जो कमाण्डर-इन-चीफ़ (प्रधान सेनापति) के फ़ौजी सेक्रेटरी थे और जो बाद में 'अर्ल हो' की उपाधि से विभूषित किए गए थे।

तुम्हें सलाम कहता है और कहता है कि लोग हमारी पूजा करने के लिए अभी तक नहीं आए। जनरल रीड* अच्छे हैं अतएव वे अपने सफ़र के लिए वापस लौट जायँगे।

मेरी आकांक्षा है कि वह मेरे जनरल को इस मोर्चे के समाप्त हो जाने के बाद मदरास भेज दें। वह इसलिए, कि जनरल ग्राण्ट के आधीन ब्रिगेडियर के पद पर रह कर काम करना उनके पद के उपयुक्त न होगा। ख़ैर, हम देख लेंगे।

तुम्हारा अतीव सच्चा'

—एच० बर्नार्ड

---

* जनरल रीड वे सज्जन हैं, जो जुलाई सन् १८५७ के दिन जनरल बर्नार्ड के हैज़ा द्वारा मृत्यु हो जाने पर उनकी जगह कमाण्डर-इन चीफ़ नियुक्त हुए थे।

पत्र संख्या ३

[जिसे जनरल सर हेनरी बर्नार्ड कमाण्डर-इन-चीफ़ ने जॉर्ज कार्निफ़ बार्न्स के नाम से १८ जून, सन् १८५७ ई० को भेजा था]

मेरे प्यारे बार्न्स,*

मैंने अभी आपका पत्र पढ़ा, जिससे मुझे कुछ सन्तोष हुआ। इसलिए कि आपने इस प्रस्ताव को पसन्द नहीं किया कि मैं अपनी छोटी सी सेना को लेकर देहली में प्रवेश करने का भीषण संकल्प करूँ। मेरा कैम्प, हस्पताल आदि—सारांश यह कि मेरी सेना का सारा सामान अरक्षित पड़ा रह जाय।

मैं स्वीकार करता हूँ, कि जो राजनैतिक सलाहकार मेरे साथ काम कर रहे हैं, उनके प्रोत्साहित करने पर मैं अचानक और भीषण धावा बोलने के प्रस्ताव पर राज़ी हो गया था, जिसमें ऊपर कही गई समस्त बातों की चिन्ता थी। दैवयोग से

* 'के' कृत सिपाही विद्रोह (Sepoy Mutiny) में इस पत्र के उद्धरण दिए गए हैं और उसमें भूल से यह लिख दिया गया है कि ये उद्धरण बर्नार्ड के एक पत्र से लिए गए हैं, जो उन्होंने सर जॉन लॉरेन्स को लिखा था। सम्भवतः ऐसा प्रतीत होता है कि इसकी प्रतिलिपि लॉरेन्स को भी भेजी गई होगी और वह किसी तरह के महोदय के हाथ पड़ गई होगी और इन्हें शायद कोई ऐसी यादद्दाश्त न मिली हो, जिससे यह प्रगट होता कि आख़िर वह उनके हाथ कहाँ से लगी।

यह प्रस्ताव काम में न लाया गया। सम्भव है, यह परम पिता का आशीर्वाद हो। इसलिए, कि जो कुछ मैंने सुना है और जिन लोगों से सलाह लेते रहना मेरा परम कर्तव्य था, उनके विचार जानने के बाद मुझे इस बात का विश्वास हो गया कि हमारी विजय उतनी ही घातक सिद्ध होती, जितनी हमारी पराजय!

जो सेना कि दो हज़ार सिपाहियों से भी कम की हो और जो देहली जैसे विस्तृत शहर में फैली हुई हो, उसकी शक्ति पर विश्वास नहीं किया जा सकता—विशेष कर इस दग़ाबाज़ी के होते हुए, जिसने चारों ओर से हमें घेर रक्खा है। मेरे जङ्गी सामान की क्या हालत होती? (यदि एक बार ही हमला कर दिया जाता)

इस विचार से कि फ़ौजी क़ानून मेरा पथ-प्रदर्शक है (यद्यपि उस हाय-तोबा का सामना करने के लिए जो इस बात पर उठाया जायगा, कि हम इतने दिनों से देहली में आख़िर बेकार तथा हिचकिचाहट में पड़े क्यों सड़ रहे हैं—नैतिक साहस अत्यन्त आवश्यक है) फिर भी मैं अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिए अधिक से अधिक प्रत्यन्त कर सकता हूँ।* धावा बोलने के लिए मुझे उपयुक्त अवसर की सावधानी से प्रतीक्षा है।

*११ जून को जनरल बर्नार्ड के नाम इस आशय की एक सूचना भेजी गई थी, जिसमें काबुली दर्वाज़ा तथा लाहौरी दरवाज़े पर फ़ौरन हमला कर देने की नीति पर ज़ोर दिया गया था। इस हुक्मनामे पर

मि० ग्रेटहेड ने* जो विचारपूर्ण प्रस्ताव पेश किया था, वह यह था, कि दोआबे (दो नदियों के बीच में अवस्थित स्थान) पर अधिकार कर लिया जाय। देहली से अलीगढ़ सेनाएँ भेजी जायँ, किन्तु यदि मैं शहर में भी होता, तब भी मैं ऐसा नहीं कर सकता था। क़िला और सलीमगढ़ की समस्याएँ अभी तक मेरे विचाराधीन हैं। शहर पर अधिकार क़ायम रहना और दो हज़ार से कम सिपाहियों के सहयोग से इन स्थानों पर चढ़ाई बोल देने का यह अर्थ है, कि मैं एक भी व्यक्ति को अलग न करूँ। हालत यह है कि देहली तोपों से पटी पड़ी है और वहाँ वे सिपाही नियुक्त हैं, जो भले ही खुले मैदान में विशेष उपयोगी सिद्ध न हों, पर पत्थर की दीवारों (फ़सीलों) के पीछे रह कर कुछ न कुछ चमत्कार अवश्य दिखा सकते हैं और जिन्हें भारी तोपों के प्रयोग का भी कुछ ज्ञान है। यही कारण है, गत सप्ताह उन्होंने अपनी इस प्रवीणता से हमें नीचा दिखा दिया; अतएव अम्बाला वाली सेना और ६ तोपें रखने वाली दो पल्टनें कभी इन पर विजय प्राप्त नहीं कर सकतीं। इनकी वर्त्तमान शक्ति और सङ्गठन का बहुत कम अन्दाज़ा किया गया है।

चार अफ़सरों के हस्ताक्षर थे, जिनके नाम हैं (१) विलबर फ्रोर्स (२) ग्रेटहेड (३) म्यूनिसिपुल चीनी (इञ्जीनियर) और (४) हडसन (खुफ़िया विभाग)

* हारवे ग्रेटहेड, जो पहिले मेरठ के कमिश्नर थे और अब मैदानी फ़ौज के राजनैतिक सलाहकार की हैसियत से काम कर रहे हैं।

बहुत कुछ सोच-विचार के बाद बर्नार्ड ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। यह धावा १२ तारीख़ की अँधेरी रात में किया जाने वाला था किन्तु ठीक निश्चित समय पर मालूम हुआ कि इस निर्धारित हमले के लिए जो सेना चुनी गई थी उसका एक प्रमुख भाग उपस्थित नहीं है। ब्रिगेडियर गियूज़ ने हुक्मनामे का अर्थ ठीक नहीं समझ पाया अतएव वह अपने ३०० सिपाहियों को लेकर निश्चित-स्थान पर न आ सका। इस प्रकार जत्था कमज़ोर हो गया और धावे के लिए किसी भी हालत में उपयुक्त न समझा गया अतएव बाध्य होकर धावा बोलने वाली सेना को अपने क्वाटरों में वापस लौट जाने की आज्ञा दे दी गई।

बावली की सराय पर हम एक मोर्चा सर कर चुके हैं। यहाँ विप्लवकारी उस समय तक हमारा भीषण मुक़ाबला करते रहे, जब तक उनकी तोपों पर उनका अधिकार रहा। उसके बाद से हम पर लगातार हमले हो रहे हैं। प्रत्येक नया हमला दुगने उत्साह से किया जाता था, पर साथ ही भारी हानि के साथ उन्हें पीछे हटा दिया जाता था। अब हम इस स्थिति पर पहुँच गए हैं, जहाँ से उस स्थान को नष्ट किया जा सकता है। मेरी समझ में सब से अच्छी नीति यह है, कि इसे कठिन काम की तरह अमली ढङ्ग में देखा जाय और यह बात भली भाँति हृदयङ्गम कर ली जाय, कि काफ़ी फ़ौज के बिना सफलता प्राप्त नहीं हो सकती।

ज़रा एक बार हम शहर में पहुँच भर जायँ, फिर तो पौ-बारह हैं, पर यदि अपना अधिकार हम क़ायम रख सकें। फिर जब कभी मि० कॉलविन को जिस किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए फ़ौज की ज़रूरत होगी, उसका उनके लिये प्रबन्ध कर दिया जायगा।

देरी से वास्तव में बड़ी उलझन होती है और हर रोज़ इन धावों में सिपाहियों का नष्ट होना बड़ा ही दुखदाई सिद्ध होता है। मैं सकुशल हूँ, यद्यपि बहुत अधिक उद्विग्न हूँ; पर मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि जितना अधिक मैं विचार करता हूँ उतना अधिक मुझे अर्थ-शून्य और निष्फल अनुभव को कार्य रूप में परिणत न करने पर हर्ष होता है और यह जानकर कुछ सन्तोष होता है, कि आप भी मेरे विचार से सहमत हैं।

मेरी धारणा केवल इतनी है (जिसे अन्य व्यक्ति भी सम्भवतः जान जायँगे) कि मुझे देहली में प्रवेश करने के अतिरिक्त और भी कुछ काम करना था।

आप का सच्चा,

—एच० एच० बर्नार्ड

पुनश्च—कल हमने उनको ख़ूब सज़ा दी और उनको भारी हानि पहुँचाई। उन्होंने किशनगञ्ज, ट्रीवेलियनगञ्ज, पहाड़पुर इत्यादि में अपने पैर तथा अपना तोपख़ाना जमाने का प्रबन्ध किया था, परन्तु हमने दो छोटे फ़ौजी दस्तों के द्वारा, जो मेजर टॉमस एच० ए० और मेजर रीड (मंसूरी बटालियन) की कमाण्ड

में थे, न केवल उनको उन स्थानों से हटा दिया, बल्कि सराय के बाहरी भाग को उनसे बिल्कुल साफ़ कर दिया और नगर के इस भाग से हमने उनको निकाल बाहर किया। सुना है कि इस बात का उनके ऊपर अत्यन्त निराशाजनक प्रभाव पड़ा है। और यह भी सुना है, कि वे बहुत परेशान हो रहे हैं। लेकिन फ़सीलों (प्राचीरों) से जो गोलाबारी वे करते थे वह वैसी ही सही और ज़ोरदार है, जैसी पहले थी। और जब तक हम अपने अभिप्राय में सफल न हों, हम कोई लाभकारी कार्यवाही कर ही नहीं सकते। व्यवहारिक कार्य की तो यह सूरत है, कि उस मुश्किल के अतिरिक्त, जो तोपख़ाना और लड़ाई का सामान एकत्र करने में उठानी पड़ती है; मेरे तोपख़ाने का कमाण्ड-अफ़सर सिर्फ़ ६ तोपों के चलाने का प्रबन्ध कर सकता है। और मेरे इञ्जीनियर के पास रेत का एक थैला भी नहीं है। वास्तव में यह हद से ज़्यादा तकलीफ़ देने वाली बात है। मैंने उस समय तक कभी क़ायदे के साथ आक्रमण करने का विचार नहीं किया, जब तक मुझे यह विश्वास न हो जावे, कि मैं उन सब की सब तोपों को, जो मेरे ख़िलाफ़ लाई जायँगी, उन्हें ख़ामोश कर दूँगा।

परन्तु इस बात को कार्यरूप में परिणत करने के लिये उनके और अधिक निकट तक पहुँचने की आवश्यकता है। विलम्ब के कारण उपद्रवकारियों के जत्थे एक दूसरे से मिल जायँगे और तब उनका आक्रमण बहुत ही ज़ोरदार हो जायगा। परन्तु मैं इस बात को माने लेता हूँ कि ऐसी कार्यवाही विषैले

प्रभावों से परिपूर्ण है। इतना होते हुये भी मैं यह बात विश्वसनीय नहीं समझ सकता, कि जब उनको देहली दरवाज़े को बन्द करने के लिये अवसर दिया गया था, तो इस समय हम उससे कहीं अधिक कर सकते थे, जितना कि हमने किया।

यदि मेरठ वाली फ़ौज दिल्ली में फ़ौरन घुस आती, तो सब कुछ बचाया जा सकता था; लेकिन जब अम्बाला वाली फ़ौज निश्चित-स्थान पर पहुँची तो अवसर कभी का हाथ से निकल चुका था।

इससे पहिले सब से बड़ी मेगज़ीन और लड़ाई के सामान का डिपो मेरे ख़िलाफ़ प्रयोग में आ रहा था। मेरे सिपाही अच्छी तरह हैं। ज़ख़्मी अच्छे हो रहे हैं; परन्तु सब के सब इस कार्य से थक गए हैं।

सदा आपका,

—एच० एच० बी०

पत्र संख्या ४

[इस पत्र को हेनरीग्रेट ने, जो देहली पर घेरा डालने वाली सेना के प्रधान राजनैतिक सलाहकार के पद पर नियुक्त थे, जॉर्ज कार्निक बार्न्स के नाम १६ जून, सन् १८५७ को भेजा था]

कैम्प, घेरा देहली

१९ जून, सन १८५७

प्रिय बार्न्स.

मिस्टर रिचर्ड्स सोमवार के दिन पानीपत चले गए और यह समाचार मैंने उस समय सुना, जब कि मैं सड़क पर से गुज़र रहा था। उनकी उपस्थिति से किसी सीमा तक वह भय जाता रहा था, जो अफ़सरों और डाक के ठेकेदारों में उस धावे के कारण पैदा हो रहा था, जिसे देहली के दो सौ सवारों की पार्टी ने अलीपूर पर किया था। प्रगट रूप से वे तहसीलदार की खोज में थे। तहसील में पटियाला के सवारों के अल्प-संख्यक जत्थे के जितने घोड़े उपस्थित थे, वे उन सब को लूट कर ले गए। ज्योंही पञ्जाब की अनियमित सेना (Irregular force) पहुँच जायगी हम उनकी इस कार्यवाही का बदला ले लेंगे। मुझे रोहतक को झिन्द के राजा साहब के चार्ज में रखने से अत्यन्त प्रसन्नता होगी। परन्तु सर एच बर्नार्ड इस समय उनकी सेना को पृथक

नहीं कर सकते और इसके बिना उनके लिये आक्रमण का प्रयत्न करना बिल्कुल निष्फल होगा।

यदि पटियाला कुछ सेना दे सके और आप को पञ्जाब से सेनाओं के हिसार की ओर प्रस्थान करने की कुछ सूचना मिले, तो इस सूरत में मैं हर्षपूर्वक इस बात पर तैयार हो जाऊँगा, कि इस ज़िले को अस्थायी रूप में उनकी सरंक्षता में दे दिया जाय। ऐसा करना उन निवासियों पर वास्तव में दया प्रदर्शन करना होगा, जो हाँसी और हिसार दोनों से सहायता की याचना कर रहे हैं। आप के इस प्रस्ताव को कार्यरूप में परिणत करने से मुझे बहुत प्रसन्नता होगी। और यदि प्रबन्ध हो जाय, तो मैं महाराजा साहब बहादुर की सेवा में ख़रीता* लिख दूँगा।

मेरा अनुमान है कि नवाब साहब झज्झर अपरिहार्य रीति से षड्यन्त्र में सम्मिलित हुए हैं, किन्तु उनका इलाक़ा आमली के उस पार है और हमें इस समय वक्त को टाल देना चाहिए। गढ़ के नवाब साहब बहादुर भाग जाने पर बाध्य हो गये हैं। और उनके पहले शासन करने वाले वंश का कोई शाहज़ादा गद्दी पर बिठा दिया गया है। शेष रईस लोग पक्षपात-हीन बने रहने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। सामान के ढेर हमारे पास आवश्यकता से भी अधिक हैं, हाँ! रुपये की कमी एक ऐसी बाधा है, जिसके विषय में हमें आशा थी, कि देहली विजय कर लेने से जाती

* सरकारी पत्र

रहेगी। मैं उन साहब की चिट्ठियाँ, जो ख़ज़ाने और कमसरियट के दफ़्तर के अध्यक्ष हैं, आप के पास भेज रहा हूँ।

जब मैं वहाँ से रवाना हुआ था, तो उस समय चार लाख के लगभग रुपया था। मैं बहुत आग्रह के साथ अनुरोध करता हूँ कि जो फ़ौजें अब यहाँ आ रही हैं उनके साथ आप रुपये की एक पर्य्याप्त रक़म अवश्य भेज दीजिये।

आपका विश्वासपात्र

—एच० एच० ग्रेटहेड

पत्र संख्या ५

[इस पत्र को ब्रगेडियर जनरल नेविल चैम्बरलेन एडज्युटेण्ट जनरल ने जॉर्ज कार्निक बार्न्स के नाम १२ जुलाई, सन् १८५७ को भेजा था]

कैम्प सन्मुख देहली
१२ जुलाई, १८५७
समय एक बजे दोपहर

प्रिय बार्न्स,

अब, जब कि करनाल हमारे सुरक्षित शस्त्रास्त्र और अन्य सामग्री का डिपो बन गया है, हमें वहाँ पैदल सेना का एक जत्था रखना चाहिए और चूँकि इस कैम्प से हम एक आदमी भी नहीं दे सकते इस कारण हमको सिपाहियों की भर्ती के लिए पञ्जाब से ही आशा रखनी चाहिए। कृपया इस समस्या के सम्बन्ध में लाहौर से पत्र-व्यवहार कीजिए और यदि और सिपाही न मिल सकें तो कम से कम सिक्ख सिपाहियों की चार पल्टनों को प्राप्त करने का प्रयत्न कीजिए। हमारा पिछला भाग खुला और शान्त रहना चाहिए। यदि हम अपनी सामग्री को अरक्षित अवस्था में छोड़ दें, तो यह हमारी बहुत बड़ी भूल होगी। यह पहला ही अवसर है, जब मैंने अधिक सेना की माँग की है।

और मैं अब भी ऐसा न करता, किन्तु कठिनाई यह आ पड़ी है, कि हम एक आदमी को भी पृथक नहीं कर सकते। ९ जून को एक भीषण लड़ाई में हमारे दो सौ सत्तर आदमी नष्ट हो गये। इस संख्या में निहत, आहत और बीमार सब सम्मिलित हैं। और इस पत्र के लिखते समय भी हम बाहर निकलने के लिए (अर्थात् आक्रमण करने के लिए) उद्यत हैं। चारों ओर से आक्रमण की धमकियाँ दी जा रही हैं।

मैंने करनाल के चुने जाने का अनुरोध इस कारण किया था, कि उसके और हमारे कैम्प के बीच यथेष्ट सुविधापूर्वक पत्र-व्यवहार का क्रम स्थापित किया जा सकता था। और साथ ही यह बात भी है, कि वह शहर से इतनी दूरी पर है कि उस पर किसी सूरत में भी अचानक आक्रमण नहीं किया जा सकता। मेरठ, सहारनपूर और मुज़फ़्फ़रनगर तक वहाँ से पत्र-व्यवहार किया जा सकता है। और चूँकि वहाँ के नवाब साहब और हमारे बीच में सन्धि है इस कारण स्थानीय उपद्रव की बहुत ही कम सम्भावना है। वर्तमान मौसम में मारकन्दर नदी* का कुछ भरोसा नहीं और इस कारण बारूद और दूसरे प्रकार की सामग्री को उसके निकट न रखना चाहिए। सुनने में आया है, कि कुछ उपद्रवकारी शिकारी तोप की टोपियों का प्रयोग करते हैं। इस कारण समस्त दूकानदारों और सब जातियों के दूसरे लोगों से, जो इन वस्तुओं का व्यापार करते हैं, इन

* करनाल और अम्बाला के बीच का दरिया

वस्तुओं को छीन लेने की शीघ्र व्यवस्था करनी चाहिए जिससे कि आग पकड़ने वाली और ज़ोर से फटने वाली बारूद के प्रकार की कोई वस्तु वे अपने पास न रख सकें। सरकार को चाहिये कि वह इस प्रकार की समस्त सामग्री के समूहों पर अधिकार करले और एक रसीद देदे।

आपको ज्ञात हो गया होगा कि भालाबरदारों की पल्टन के हथियार रखवा लिये जाएँगे और यह, कि दसवीं एल० सी० पल्टन भी नहीं आ रही है। जब तक आप हमारे पीछे वाले प्रदेश को शान्त बनाये रक्खेंगे और हमें सामग्री देते रहेंगे, तब तक हमारी दशा ठीक रहेगी या कम से कम हम उस समय तक सामना करते रहेंगे, जब तक कि वह दिन न आ जाय, कि अन्य लोग हमारा स्थान लेने के लिये उद्यत हो जाएँ।

आपका सच्चा,

—नेविल चेम्बरलेन

चेम्बरलेन को जॉन लॉरेन्स ने पहले पञ्जाब से चलने वाले जत्थे का प्रमुख अफ़सर बनाया था परन्तु करनल चेस्टर की मृत्यु के बाद, जो बावली की भयंकर लड़ाई में निहत हुये थे, वह एडज्युटेण्ट जनरल बना दिये गए।

पत्र संख्या ६

[इस पत्र को लेफ़्टेनेण्ट हेनरी नॉर्मन स्थानापन्न एडज्युटेण्ट जनरल ने जॉर्ज कार्निक बार्न्स के नाम १६ जौलाई, सन् १८५७ को भेजा था]

कैम्प सन्मुख देहली
१९ जौलाई, १८५७

प्रिय बार्न्स,

चेम्बरलेन ने मुझे आपकी १७ ता० की चिट्ठी इसलिये दी, कि मैं एक-दो बातों का उत्तर दूँ। करनाल के तोपख़ाना सम्बन्धी सामग्री का प्रबन्ध कप्तान नीचवुल के सिपुर्द किया जाने वाला था। परन्तु वे बीमार हो जाने के कारण अम्बाला ही में रह गए। इस कारण मैंने तोपख़ाने के किसी डिप्टी एसिस्टेन्ट कमिश्नर को या फ़ीरोज़पुर से कर्त्तव्यपूर्ति के लिये किसी स्थायी कण्डक्टर को तार द्वारा बुला भेजा है। यदि कप्तान नीचवुल साहब स्वस्थ हो गये तो निस्सन्देह पहली आज्ञा* ज्यों की त्यों बनी रहेगी।

जो अफ़सर निजी छुट्टी पर गये हुये थे उन सब को वापिस आजाने की आज्ञा १४ मई को देदी गई है। इस आज्ञा को कुछ समय पश्चात् दुहरा भी दिया गया था और हमारे विभाग के

* जिसे मिस्टर लीवेसन के द्वारा पहुँचाया गया था

कप्तान बेकर ने यह सूचना दी है, कि इस आज्ञा का पालन भी हो चुका है। मुझे किसी ऐसे अफ़सर का समाचार ज्ञात न हो सका, जिसने इस आज्ञा का पालन न किया हो यद्यपि कुछ लोगों ने बीमारी के सर्टिफ़िकेट भी प्राप्त कर लिए हैं। मालूम होता है कि करनाल में यथेष्ठ सेना उपस्थित है।

इसमें एतराज़ की कोई बात नहीं है, यदि आप ब्रगेडियर हार्टली से यह प्रार्थना करें, कि वह पाँचवें बटालियन के दो अफ़सरों को करनाल में कार्य करने के अभिप्राय से भेज दें, यदि उनकी वहाँ पर वास्तव में आवश्यकता हो। किन्तु यदि कोई अफ़सर न मिल सके तो एक (लेफ़्टेनेण्ट चेस्टर के मातहत अफ़सर) को सरलता पूर्वक नौशेरा की बटालियन के साथ, जो सहारनपुर में स्थित है, काम करने के लिए भेजा जा सकता है। हमने अपने बैरियों को कल तीसरे पहर के समय बिना किसी कठिनाई के सब्ज़ी मण्डी के बाहर निकाल दिया। हमारी ओर १३ निहत और ६९ आहत हुए। अफ़सरों में कल कुल मिला कर यह हानि हुई—लेफ़्टेनेण्ट करवज़ियर (७५ वीं) निहत, अनीसायन ब्रमलदर (४५ वीं देशी पैदल) जो दूसरी फ़्यूज़लियर्ज़ के साथ काम कर रहे थे, सन्निपात के कारण मर गए। लेफ़्टेनेण्ट जोन्स (इञ्जीनियर) की टाँग काट डाली गई, लेफ़्टेनेण्ट पालटौन (६१ वीं पैदल) बहुत ज़ख्मी हुये और लेफ़्टेनेण्ट चेचेस्टर को भी हलकी चोट आई।

अब और पैठानों को मत भेजिए। यह चेम्बरलेन की इच्छा

है और इसके लिये पर्य्याप्त कारण हैं। निःसन्देह आप उनको उस समय भेज सकते हैं, जब कोई रिसाला आ रहा हो और वे भी उसमें मौजूद हों। परन्तु जितने कम हों, उतना ही अच्छा है।

आपका विश्वासपात्र,

—एच. ए. नॉरमन

पत्र संख्या ७

[इस पत्र को लेफ़्टेनेण्ट डबलू० यस० आर० हडसन ने जे० डगलस फ़ारसीथ डिप्टी कमिश्नर अम्बाला के नाम २१ जूलाई, १८५७ को भेजा था]

देहली कैम्प—२९ जुलाई, १८५७

प्रिय फ़ारसीथ,

जो बूढ़ी महिला स्वयं इस पत्र के साथ आ रही है वह देहली के घेरे की पूर्ण तथा मूर्तिमान कथा है।

वह हमारे विरुद्ध शहर में जिहाद की घोषणा करती थी और अपने चमत्कारपूर्ण तथा ओजस्वी भाषण द्वारा आश्चर्यकारी रीति से मुसलमानों के हृदयों में उत्साह उत्पन्न करती थी। अन्त में उनकी असफलता से खिन्न तथा रुष्ट होकर वह स्वयं रणक्षेत्र में अवतरित हो गई और हरित-वस्त्र धारण करके, घोड़े पर सवार हो, तलवार और बन्दूक़ से सुसज्जित होकर इसने सवारों के एक जत्थे की अध्यक्षता की और ७५ वीं पैदल सेना पर आक्रमण कर बैठी। सिपाहियों का कथन है कि इस एक का सामना करना ५ योद्धाओं के सामना करने से अधिक घातक था और वे यह भी कहते हैं, कि इसने उनके साथियों में से बहुतों को बन्दूक़ का निशाना बना दिया। अन्त में वह घायल होकर

गिरफ़्तार हो गई। जनरल ने पहले-पहल उसे स्वतन्त्र रूप में चले जाने की आज्ञा देनी चाही थी किन्तु मैंने उनसे आग्रह-पूर्वक प्रार्थना की कि आप ऐसा न कीजिए, क्योंकि वह पुनः शहर में विजयी रूप में प्रवेश करेगी और हमारे अधिकार से निकल जाने पर पक्षपात का एक तूफ़ान पैदा कर देगी और निःसन्देह यह प्रगट करेगी, कि वह अपने चमत्कार के कारण बच गई है और इस प्रकार वह जोन ऑफ आर्क* का पद प्राप्त कर लेगी। मुझे उसे आपके पास भेजने की आज्ञा मिल गई है जिससे वह

* जोन ऑव आर्क

यह महिला 'ऑर्लियन्स की कुमारी' के नाम से भी प्रसिद्ध है। यह फ्रान्स में मेनिसी के निकट पैदा हुई थी। जन्म-काल की तारीख़ तो ठीक तौर से ज्ञात नहीं, किन्तु वह युवावस्था में सन् १४३१ में जला दी गई थी। अतः यह बात निर्विवाद सिद्ध है, कि वह १५वीं शताब्दी के आरम्भ में पैदा हुई होगी। मार्च, सन् १४२९ की घटना है कि शहर आर्लियन्स को अङ्गरेज़ी सेना ने घेर रक्खा था। यह कुमारी फ्रान्स के बादशाह चार्ल्स सप्तम के पास गई और कहा कि मुझे ईश्वर की ओर से यह काम सौंपा गया है, कि मैं शहर को बचा लूँ और आपके सिंहासनारोहण का प्रबन्ध करूँ। पार्लियामेन्ट के विवाद के पश्चात् उसको युद्ध-सचिव बना दिया गया। तब वह अपने कार्य-सिद्धि के निमित्त चल पड़ी। उसकी प्रशंसा ड्यूनाय और एरकून जैसे वीर योद्धाओं ने की। अपनी निजी वीरता, साहस और पराक्रम से सेनाओं में असाधारण उत्साह उत्पन्न कर दिया। अन्त में उसने आर्लियन्स को बचा लिया (८ मई) १७

उस समय तक, जब तक यहाँ का काम समाप्त न हो जाय, बन्दीगृह में अथवा किसी ऐसे स्थान में, जहाँ आप उचित समझें, सुरक्षित रक्खी जाय।

क्या आप कृपया इस बात पर ध्यान रक्खेंगे, कि इसका आचरण सन्तोषजनक रहे। यह कहते हुए आश्चर्य मालूम होता है कि वास्तव में इस खूसट बुढ़िया ने यथेष्ट प्रभाव कर लिया था।

आपका विश्वसनीय,

—डबलू० एस० आर० हडसन

जूलाई को सिंहासनारोहण की विधि पूरी की गई। इसके पश्चात् उसने पेरिस की ओर ध्यान दिया परन्तु इसमें उसे असफलता हुई और वह घायल हो गई। सन् १४३० ई० में उसने कोम्पियन के प्रसिद्ध नगर से निकल कर छापा मारा परन्तु बन्दी होकर अङ्गरेज़ों के हाथ बेच दी गई। इसे रोयन में बन्दी कर दिया गया और इसके साथ अत्यन्त कठोरता का व्यवहार किया गया। ९ जनवरी, १४३१ को इसके विरुद्ध मुक़दमा चलाया गया। यह अदालती कार्यवाही नाममात्र की थी, क्योंकि न्याय का जितना हनन वहाँ किया गया उतना कहीं न हुआ होगा। काय के पादरी की गवाही पर उस पर जादूगरी का अपराध लगाया गया। और उसी के दण्ड में उसे ३० मई १४३१ को जला दिया गया। उस काल से उसे एक पवित्र देवी का पद प्राप्त हो गया और पश्चिम के चित्रकारों ने उसके चित्र बनाकर उसे अमर कर दिया।

—अनुवादक

पत्र संख्या ८

[इस पत्र को हेनरी ग्रेट साहब ने, जो दिल्ली की निकटस्थ फ़ौजों के प्रधान राजनैतिक-सलाहकार थे, जॉर्ज कार्विक वार्न्स को १५ अगस्त, १८५७ को भेजा था]

कैम्प सन्मुख देहली

१५ अगस्त, सन ५७

प्रिय वार्न्स,

मौलवी रजब अली साहेब ने मुझसे यह इच्छा प्रगट की, कि मैं आपको यह सूचना दूँ कि उन्होंने हकीम एहसन उल्ला के नाम एक पत्र भेजा था, जो मुझे पढ़ कर सुनाया गया था। और मेरा यह अनुमान था कि इससे कुछ भी हानि न होगी किन्तु यह सम्भव है कि इसके कारण हकीम साहब बादशाह और उपद्रवकारियों के अभिप्रायों का भीतरी भेद खोलने में समर्थ हो सकें। मौलवी साहब कहते हैं, कि इसके कारण हकीम साहब का बहुत अपमान हुआ। कारण यह है, कि वह पत्र सिपाहियों के हाथ में पड़ गया और उन लोगों ने उनके घर की तलाशी ले डाली परन्तु इस बात का कठिनता से विश्वास किया जा सकता है। (कि हकीम एहसन उल्ला खाँ के घर की तलाशी ली गई अथवा उन्हें कुछ हानि पहुँची) कैम्प की दशा में बहुत

अधिक उन्नति हो गई है। हम को हर प्रकार की सुविधा है। अभी तक फ़ौज के सिपाहियों का स्वास्थ अच्छा है और उसके लिये हम ईश्वर के कृतज्ञ हैं। बागियों को सब मुक़ामों पर और लड़ाई की सब चालों में बहुत ही असफलता हुई है। जब तक क़िला तोड़ने वाली तोपें पूरी सामग्री समेत न पहुँच जावें, तब तक किसी भी जङ्गी कार्यवाही का फ़ैसला करना अत्यन्त निष्फल है। उस समय तक यह भी ज्ञात हो जायेगा, कि जनरल हेवलॉक की राह देखनी चाहिए अथवा नहीं। अब तो प्रत्येक बात से पता चलता है कि अवध की उपद्रवी सेना बहुत जल्दी ही साफ़ हो जायेगी। मुझे आगरे से यह समाचार मिला है, कि २॥ हज़ार नैपाली फ़ौज जनरल हेवलॉक से लखनऊ के स्थान में मिलने वाली थी। अन्त में ड्रमन्ड को आगरे के देशी अफ़सरों की त्रुटियों और नालायक़ियों की सज़ा भुगतनी पड़ी। उन्होंने उन पर विश्वास किया और वहीं स्टेशन को बरबाद करने में सब से आगे थे। पानीपत में ३,२२,००० रुपया लूट में मिला है और मेरठ वालों ने अपने खज़ानों को भरपूर कर लिया है। हडसन पथ-प्रदर्शकों के साथ बाहर गए हैं। और वे वहाँ उद्रवकारियों के उस दस्ते की देख भाल करेंगे, जो रोहतक चला गया है। उन उपद्रवकारियों का यह इरादा था, कि वे ऐसे ही थोड़े से जत्थों को बाहर भेज कर, देश में अशान्ति पैदा कर सकें। परन्तु किसी व्यक्ति ने कहा कि यह एहसन उल्ला की एक चाल है, जिससे वे देहली की फ़ौज को (उसकी टुकड़ियाँ बाहर

भेज कर) शक्तिहीन कर सकें। और शहर पर पुनः हमारा अधिकार करा दें।

मुझे विश्वास है कि आपने भिन्द की फ़ौजों के द्वारा रोहतक के कुछ विभागों पर अधिकार कर लेने के प्रस्ताव पर कार्य न किया होगा। निःसन्देह ऐसी कार्यवाही न करने के लिये आपके पास पर्य्याप्त कारण हैं। ब्रगेडियर वॉलटायल को आगरे में बरख़ास्त कर दिया गया है और उनके स्थान पर करनल कॉटन कार्य कर रहे हैं।

आपका विश्वसनीय,

—एच० एच० ग्रेटहेड

———

पत्र संख्या ९

[इस पत्र को हेनरी ग्रेटहेड साहब ने, जो दिल्ली की निकटस्थ फ़ौजों के प्रधान राजनैतिक-सलाहकार थे, जार्ज कार्निक बार्न्स के नाम ३० अगस्त, १८५७ को भेजा था]

कैम्प—३० अगस्त, १८५७

प्रियवर बार्न्स,

ली वेसन की यह इच्छा है कि गोहाना में मालगुज़ारी वसूल करने के निमित्त एक तहसीलदार की नियुक्ति कर दी जाय। मैं उनको सहसा यह अधिकार नहीं देता। कारण यह है, कि इस बात से महाराजा साहब झिन्द के प्रबन्ध से टक्कर खाने की आशङ्का है। परन्तु यदि राजा साहब कुछ न कर रहे हों, तो मेरी यह इच्छा है, कि आप ली वेसन से कह दें, कि वे अत्यन्त सुन्दर रीति से मालगुज़ारी वसूल करने का प्रबन्ध करदें।

मुझे इस बात पर विश्वास नहीं होता, कि लखनऊ के लिये किसी बात का ख़तरा है। हेवलॉक साहब विट्ठर और शिवराजपुर में उपद्रवकारियों को हटाकर अपने दाहिने-बायें और पीछे के भागों को बाग़ियां से साफ़ कर रहे हैं। और मैं इस बात का अनुमान भी नहीं कर सकता, कि यदि लखनऊ की क़िला-बन्द फ़ौज को किसी प्रकार का डर होता, अथवा उसके बचाने की

आवश्यकता होती, तो वे इस प्रकार की कार्यवाही को जारी रखते। आगरे के क़िले की फ़ौज के एक जत्थे ने अलीगढ़ के निकट एक बड़ा मारका सर कर लिया है। उन्होंने ३००० उपद्रवकारियों को मार भगाया और उनके तीन-चार सौ जवानों को समाप्त कर दिया है। नाभा के सवारों में कॉक्स का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। मेजर ट्रेनड़ी इमनसाइन मार्श और तीन प्राइवेट अफ़सर क़त्ल हुये हैं। कप्तान पील की अध्यक्षता में एक ब्रगेड भेजा जा रहा है। मदरास की पैदल फ़ौज का एक ब्रगेड कलकत्ता पहुँच गया है। मदरास की फ़ौजों ने जबलपुर और तनजोर पर अधिकार कर लिया है।

आपका विश्वसनीय,

एच० एच० ग्रेटहेड

———

पत्र संख्या १०

[इस पत्र को हेनरी ग्रेटहेड साहब ने, जो दिल्ली की निकटस्थ फ़ौजों के प्रधान राजनैतिक-सलाहकार थे, जॉर्ज कार्निक बार्न्स के नाम ६ सितम्बर, सन् १८५७ को भेजा था]

केम्प—९ सितम्बर, १८५७

प्रियवर बार्न्स,

यदि आप दैनिक तार-समाचार पढ़ते रहे हैं तो उनके सामने मेरे समाचार बासी होंगे। क़ुदसिया बाग़ और लडलो-कैसल ७ तारीख़ की रात को अधिकार में आ गए थे। और उसी समय मोरी दरवाज़े पर ६५० गज़ के फ़ासिले से १० तोपों की एक बैटरी लगा दी गई थी। सवेरा होते होते चार तोपें चलनी प्रारम्भ हुईं और सायङ्काल तक सब की सब कार्य में व्यस्त रहीं। आरम्भ में तोपख़ाने पर अधिक गोले बरसाए गए। और क़ुदसिया और लडकी-चौकियों पर भी आक्रमण किया गया। परन्तु हमारी ओर हानि बहुत ही कम हुई। लेफ़्टिनेण्ट हाइल-डियरेण्ड (तोपख़ाना) और लेफ़्टिनेण्ट बेज़ईन (बिल्लोची) निहत और लेफ़्टिनेण्ट बर्ड (तोपख़ाना) आहत हुए और लग-भग ३० सिपाही निहत और आहत हुए। गत रात्रि से लेकर प्रातःकाल के दस बजे तक केवल तीन आदमी घायल हुए। मोरी

दरवाज़ा और काश्मीरी दरवाज़ा पर निशानाबाज़ी अत्यन्त प्रभावजनक रही। गत रात्रि को २२ छोटी तोपें लगाई गईं थीं और एक भारी तोपों की बैटरी भी तैयार है और जब ये सब लग जाएँगी तो गोलाबारी अत्यन्त भीषण होगी। मेरे भाई (लेफ़्टिनेण्ट बिलवरफ़ोर्स ग्रेटहेड रॉयल इञ्जीनियर्स) पश्चिमीय आक्रमण के प्रधान सञ्चालक हैं। मुझे उनके पास से भी एक अत्यन्त रोचक और उत्साह-वर्धक पत्र मिला है। वह तोपों की एक उग्र बाढ़ छोड़ने के लिए परसों का दिन नियत करते हैं। जिस प्रगति से ब्राइण्ड अपनी दस तोपों से काम ले रहे हैं, उसे देखते हुए यह कहा जा सकता है, कि उस समय तक मोरी-दरवाज़े का बहुत ही कम भाग शेष रह जायगा।

आपका विश्वसनीय,

—एच० एच० ग्रेटहेड,

---

*

पत्र संख्या ११

[इस पत्र को हेनरी ग्रेटहेड साहब ने, जो दिल्ली की निकटस्थ फ़ौजों के प्रधान राजनैतिक-सलाहकार थे, जॉर्ज कार्निक बार्न्स के नाम १३ सितम्बर, १८५७ को भेजा था]

कैम्प—१३ सितम्बर, १८५७

प्रियवर बार्न्स,

इस समय तो मोरी दरवाज़े का बुर्ज भारी तोपों के लगाने के लिए उपयुक्त नहीं है। परन्तु फिर भी तोपें वहाँ से कभी कभी धोखा देने के अभिप्राय से छोड़ी जाती थीं। कश्मीरी दरवाज़े का बुर्ज प्रभावजनक रीति से चुप कर दिया गया है। अब वह खण्डहरों का एक ढेर मात्र है और तोपों के जो गोले वहाँ फेंके जा रहे हैं उनकी मौजूदगी में वहाँ किसी को भी टिकने का साहस नहीं होता। बुर्ज के दाहिने हाथ वाली प्राचीर में एक बड़ा छेद कर दिया गया है। और हमारे गोले क्रमशः उसको चौड़ा कर रहे हैं। छेद करने वाली बाईं ओर की बैटरी ने जो चुङ्गी-घर के अहाते की दीवार से १८० गज़ की दूरी पर लगाई गई थी, केवल कल से गोले बरसाने आरम्भ किये हैं। उस तोपख़ाने के बनाने में असीम विपत्तियों का सामना करना पड़ा और जङ्गी कामों में इसके कारण बाधा भी पड़ गई। पहले-पहल इसे क़ुदसिया-

बाग़ में लगाने का विचार था। वहाँ वह अधिक सुरक्षित रूप से और शीघ्र तैयार किया जा सकता था; किन्तु उसके और प्राचीर के बीच में ऐसी ऐसी नई कठिनाइयाँ आ पड़ीं, जिनका उल्लेख किसी भी मानचित्र में न था। इसी कारण सामने की ओर बहुत सी नई ज़मीन को इतनी दूरी से दुरुस्त करना पड़ा, कि वहाँ मज़दूरों पर अत्यन्त ही उग्र रूप में गोलाबारी होती रही। तोपख़ाना कल तीसरे पहर तक तैयार न हो सका। अब उसका प्रयोग पानी के बुर्ज और बीच वाली दीवार के विरुद्ध किया जा रहा है। किन्तु यह कार्य अत्यन्त ही कठोर परिश्रम का है। प्रत्येक व्यक्ति को कप्तान फ़िगन की मृत्यु का, जिनके शिर में तोपें चलने के थोड़ी ही देर बाद गोली लगी, असीम शोक है। वह अत्यन्त वीर और पराक्रमी थे और अपने को ख़तरे में डालने से कभी न हिचकते थे। गोली लगते समय उनका आधा शरीर खाई के बाहर था और वह यह देख रहे थे कि निशानाबाज़ी कहाँ से की जाए। जिन भयप्रद स्थितियों को सुगम बनाया गया है, वे अत्यन्त ही भयङ्कर थीं। तोपख़ाने के अफ़सरों को ज़रा सा भी आराम करने का अवसर नहीं मिला। जब से तोपें प्रयोग में लाई जा रही हैं, तब से वे रात दिन काम में लगे हुये हैं। शहर की सीधी गोलाबारी में बहुत कमी हो गई है। परन्तु शत्रु अप्रत्याशित स्थानों पर नवीन तोपें चढ़ाने में अत्यन्त ही चतुर और प्रवीण मालूम होते हैं। वह उस मैदान से, जो हमारे दाहनी ओर है, भीषण रूप से घातक गोलाबारी कर

मैनपुरी—सेना माँगने के लिए वहाँ के राजा ने एक अर्ज़ी भेजी थी। मिरज़ा मुग़ल को आज्ञा दी गई कि सेना से सलाह कर के कुछ सेना मैनपुरी भेज दें। दूसरे रोज़ सैनिकों ने कहा कि वह दिल्ली छोड़ना पसन्द नहीं करती, जब तक अङ्गरेज़ों को दिल्ली से न निकाल दे। राजा को ऐसा ही उत्तर दे दिया गया। इस ज़िले से और कोई अर्ज़ी नहीं आई।

गोरखपुर, फ़तेहपुर, या कमायूँ—ज़िले से किसी अर्ज़ी के आने की मुझे याद नहीं है।

इलाहाबाद—इस ज़िले से मौलवी लियाक़त अली आये थे, जो वहाँ के गवर्नर बनाये गये और कोई अर्ज़ी नहीं आई।

राजा बाँदा—के यहाँ न कोई पत्र भेजा गया और न वहाँ से आया। H 86 | Kh 45 A

अज़ीमगढ़, शाहजहाँपुर, इटावा, ग़ाज़ीपुर, गया, बनारस से कोई पत्र-व्यवहार नहीं हुआ। H 86 | 375

बुन्देलखण्ड, जबलपुर, सागर, मालवा, दक्खिन—से कोई अर्ज़ी आने की याद नहीं है।

हैदराबाद, कच्छ गुजरात, कलकत्ता, पूर्वीय प्रदेश, मुङ्गेर, बैरकपुर, दानापुर—कहीं से कोई पत्र-व्यवहार नहीं हुआ।

पटना—नवाब पटना की, न तो कोई अर्ज़ी आई, और न बादशाह ने ही पत्र भेजा।

पञ्जाब—किसी दल ने कोई पत्र नहीं भेजा। ज़िला के बोरी दुआबा ने भी कुछ नहीं लिखा, और न बादशाह ने ही कोई पत्र भेजा। मुझे पता नहीं है कि फ़ौजें पञ्जाब की प्रजा को भड़का रही थीं। बुन्देलों और बादशाह में कोई पत्र-व्यवहार नहीं हुआ। दो आदमी बख़्त खाँ के द्वारा दरबार में आये थे और कहा गया था कि यह अखोन्द से आये हैं। यह लोग अफ़ग़ानी थे और हसन अस्करी ने उन्हें बादशाह के सामने पेश किया था। वहाँ से एक तलवार बादशाह की भेंट में आई थी, एक चिट्ठी थी, जिस पर वहाँ की मोहर थी, जिसमें लिखा था कि यह दूत यहाँ के ख़लीफ़ा हैं। इसमें लिखा था कि शहर में मुनादी करा दी जावे कि अखोन्द वाले जिहाद के लिए दिल्ली आ रहे हैं। लेकिन दूसरे दिन एक सय्यद ने बादशाह से कहा कि यह अखोन्द का भेजा आदमी नहीं है। मैं सय्यद का नाम नहीं जानता। बख़्त खाँ को इसकी जाँच के लिए हुक्म दिया गया। मैं नहीं जानता कि उन्होंने क्या रिपोर्ट दी। यह शख़्स ३ दिन दिल्ली में रहा।

बादशाह की राजनीति

फ़ौज और शाहज़ादों को एक बार कहा गया कि वह शासन-कार्य में दख़ल न दें। न्याय मुफ़्तियों के हाथ में था। उसमें सैनिक अफ़सर और मालगुज़ारी वाले दख़ल न दें। लेकिन इस आज्ञा पर कार्य नहीं हुआ। सेना और शाहज़ादे हमेशा दख़ल देते थे। विभिन्न ज़िलों में तहसीलदार नहीं नियुक्त हुए थे, बल्कि बख़्त-

पत्र संख्या १२

[इस पत्र को हेनरी ग्रेटहेड साहब ने, जो दिल्ली की निकटस्थ सेना के प्रधान राजनैतिक-सलाहकार थे, जॉर्ज कार्निक बार्न्स के नाम १६ सितम्बर, १८५७ को भेजा था]

दिल्ली, १६ सितम्बर १८५७

प्रियवर बार्न्स,

मैंने लडलो-कैसल की ऊँचाई से हल्ले का निरीक्षण किया। मैं अनुमान भी नहीं कर सकता, कि कोई व्यक्ति अधिक काल तक उन अल्प क्षणों की विकलता को सहन कर सकता है, जो जत्थे के शिरों के लुप्त होने और उसके भग्न-स्थान तक पहुँचने के लिए बीतने आवश्यक हैं। जो गोलाबारी प्राचीर से पानी के बुर्ज वाले छेद के विरुद्ध की जा रही थी, वह इतनी भीषण थी कि केवल दो सीढ़ियाँ खाई तक पहुँचने में सफल हो सकीं। मेरे भाई* बेलवी तोपखाने से उस भग्न स्थान तक जाते जाते घायल हो गये। गोली उनकी दाहिनी हँसली से गुज़र कर सीने के पार उतर गई। दूसरे भाई × धावे के समस्त भय सहन करने के पश्चात् बच गये

---

* मिस्टर कॉलवन की मृत्यु ६ सितम्बर को हो चुकी थी।

× लेफ्टिनेण्ट विल्वर फ़ोर्स ग्रेटहेड, जो दूसरे जत्थे से सम्बन्ध रखते थे।

और ईश्वर को धन्यवाद है, कि अब वह बिल्कुल स्वस्थ-चङ्गे हैं। कश्मीरी दरवाज़े की प्राचीर के छेद तक सीढ़ी लगाकर पहुँचने और दरवाज़े को बारूद द्वारा उड़ा देने और भीतर प्रवेश करने के काम बहुत ही सफल रीति से सम्पन्न हुये। यह सब कुछ दिन-दहाड़े हुआ। निकलसन का जत्था प्राचीर के किनारे-किनारे धावा करता हुआ लाहौरी दरवाज़े के बुर्ज तक पहुँच गया। वह घायल हो गये। युद्ध-सामग्री में न्यूनता आ गई और उन्होंने (उपद्रवियों ने) पलट कर फिर काबुली दरवाज़े पर आक्रमण किया। करनल कैम्बल का जत्था, जो जान पर खेलने वाले वीर सेटकॉफ़ के अधीन था, अत्यन्त गौरव-पूर्वक जामा मस्जिद पहुँच गया। इनके इञ्जीनियर-अफ़सर गोली खाकर मारा गया और रेत के थैले पीछे रह गये।

अन्य लोग टेंडी और बगाँव (इञ्जीनियर्स) की अधीनता में भेजे गये। पहले साहब तो निहत और दूसरे साहब आहत हो गये। लाहौरी दरवाज़े वाले भाग से कोई सहायता नहीं आई और इस लिये कैम्बल को पीछे हटना पड़ा। पहले बेगम के बाग़ की ओर, जिसे वह एक घण्टे तक अपने अधिकार में रख सके और तत्पश्चात् गिरजा के अहाते में। यह एक नाज़ुक अवसर था। हमारे सिपाही थक कर चूर हो गये थे। बहुत से अफ़सर बेकार हो गये थे और घबराहट बहुत अधिक फैल गई थी और यह मालूम हो गया था, कि रीड का जत्था किशनगञ्ज पर अधिकार करने में नितान्त असफल रहा। तोपें लाई गईं और

रहे हैं! हमारी बाईं ओर दरिया की दिशा से भी दो तोपों के द्वारा अबतक गोलाबारी कर रहे हैं। सलीमगढ़ भी हमारे समस्त पश्चिमीय तोपख़ाने पर गोले और बम फेंक सकता है। इन सारी कठिनाइयों के होते हुये भी हमारी कार्यवाहियाँ उन्नति कर रही हैं। और मुझे विश्वास है, कि कल या परसों हल्ला प्रारम्भ कर दिया जायगा। कमाण्डिङ्ग अफ़्सरों को समस्त आदेश मिल चुके हैं। सारे स्थानों पर रक्षा का पूरा प्रबन्ध कर लिया गया है। केवल बाहर निकल कर उनके अचानक धावों की रोक-थाम के लिये कुछ नहीं किया गया है और वे इन धावों का कुछ प्रबन्ध कर भी नहीं सकते। घिरी हुई सेना में से सिपाहियों के भाग जाने के सम्बन्ध में मुझे कोई विश्वसनीय समाचार नहीं मिला। घेरा डालना बच्चों का खेल नहीं है। कोई भी शक्ति हमारी सेना की प्राणोपम वीरता में बाधा नहीं डाल सकती। सब बातों का ध्यान रखते हुये, हमारी हानि भारी नहीं कही जा सकती। कुछ अफ़्सरों के नामों का उल्लेख ऊपर हो चुका है इनके अतिरिक्त निम्न लिखित हानियाँ हुई हैं :—

घायलों की सूची

मेजर कैम्बल (तोपख़ाना) लेफ्टिनेण्ट अर्ल (तोपख़ाना) लेफ़्टिनेण्ट गिल्पी (तोपख़ाना) चान्सलर (७५ वीं सेना) रेण्डल (६९ वीं देसी पैदल सेना) लॉकहार्ट (ला) ईदन (६० वीं राइफ़ल्स)

मुझे और किसी का नाम याद नहीं आता। विलियम एडवर्ड्स फ़तहगढ़ के निकट किसी गाँव में परवी और उनके बाल बच्चों समेत सानन्द जीवित हैं। मुझे बेचारे हावथॉर्नहिल का शोक है। वह अच्छा मनुष्य था।

उत्तर-पश्चिमीय विभाग में हमारे पास अफ़सर बहुत कम रह गये हैं। मिस्टर कॉलविन पेचिश से पीड़ित हैं। उन्होंने अवसर पाते ही चले जाने का विचार पक्का कर लिया है। मैं अपने प्रबन्ध को पूर्णरूप तथा नवीन रीति से सङ्गठित करने को तैयार हूँ। परन्तु मैं यह नहीं कह सकता, कि आई० पी० ग्राण्ट कार्यकारिणी शक्ति को दृढ़ बनायेंगे या नहीं। मेरे आदमियों ने विशेषकर मिसेज़ बार्न्स ने आपकी धर्मपत्नी को बहुत बहुत पूछा है और वे उनकी क्षेम-कुशल जानने के लिये सदा उत्सुक रहती हैं।

आपका विश्वसनीय,

—एच० एच० ग्रेटहेड

———

पत्र संख्या १३

[इस पत्र को सर जॉर्ज लॉरेन्स चीफ़ कमिश्नर पञ्जाब ने, जॉर्ज कार्निक लॉरेन्स के नाम ११ अक्टूबर, १८५७ को भेजा]

लाहौर,

११ अक्टूबर, १८५७

प्रिय लॉरेन्स,

आपने जो पचास रुपये डाक बङ्गले में जिस निर्धन लड़की को दिये थे मैं उस ही को आप की सेवा में भेज रहा हूँ। मुझे उसका नाम याद नहीं रहा। मुझे आशा है कि वह सुरक्षित रूप से अपने निर्दिष्ट स्थान तक पहुँच जायगी। मैंने सॉन्डर्स को लिख भेजा है कि (मौलवी) रजबअली साहब को भेज दें जो बेचारे अपनी सेवाओं के होते हुये भी विचित्र विपत्ति में फँस गये हैं। मुझ दुःखी को उनके पञ्जाब में वापिस बुला लेने से प्रसन्नता होगी और यहाँ मैं उनके लाभ का विशेष ध्यान रक्खूँगा।

तूफ़ान समाप्त हो गया और हमें साँस लेने का अवकाश मिला और जब मैं विगत घटनाओं पर दृष्टि डालता हूँ तो मुझे इस बात पर आश्चर्य होता है, कि हम लोग किस प्रकार अब तक ज्यों के त्यों जीवित स्थित हैं। केवल परमात्मा की अनुकम्पा के कारण हम जीवित बचे हैं। निश्चयरूपेण यह बात हमारी प्रत्याशा को उल्लंघित कर गई, कि समस्त पञ्जाबी पल्टनें विश्वास योग्य

तथा स्वामि-भक्त रहीं। हज़ारा के विषय में मुझे अभी सन्तोष नहीं हुआ। मरी में भी कोई महत्वपूर्ण घटना घटित होने वाली थी और जैसी कि मैंने आशा की थी, समस्या अभी पूर्ण रीति से हल नहीं हुई। मैं पिण्डी में एक और सेना भेज रहा हूँ और उस सेना को हटा देना चाहता हूँ, जो लुधियाना में अभी भरती की गई है। गोलनियर में दुष्प्रबन्ध फैला हुआ है और जङ्गल बहुत घना है और उपद्रवियों को बड़ी सरलता से वहाँ पर सुरक्षित स्थान मिल सकते हैं। जॉन पियन, जिन्होंने सेना का सञ्चालन किया था, अत्यन्त कायर निकले क्योंकि जब बदमाश उनके अधिकार में थे तब उनका कुछ भी न कर सका। अब उन्हें बुख़ार चढ़ आया है। इस कारण अब उनको अवश्य लौट आना चाहिए। तब कहीं मैं आशा कर सकता हूँ, कि सब मामले ठीक ठीक तै हो सकेंगे।

सिक्खों की उन दो पल्टनों का क्या परिणाम हुआ, जिन्हें रिक्टस् (डिप्टी कमिश्नर लुधियाना) ने भर्ती किया था। मुझे आशा है कि उन्हें तोड़ न दिया गया होगा।

आप जानते हैं कि मेरा स्वभाव लोगों की, आवश्यकता से अधिक प्रशंसा करने का नहीं है। अब मुझे अपनी भूल मालूम हो गई है किन्तु जो कुछ भी मैं कहता हूँ उससे मेरा अभिप्राय वही हुआ करता है। और मेरे मत से तो आपने बहुत अच्छा किया कि डिवीज़िन को दाहनी ओर रक्खा और सेना की सहायता की। आपकी चौकी भीषण स्थिति में थी। पटियाला, नाभा

बड़े-बड़े बाज़ारों की ओर मोड़ दी गई और इस प्रकार पाण्डे का अन्तिम अवसर भी हाथ से निकल गया।

खेद है कि जम्मू की सेना जब से अपने पहाड़ी स्थानों से निकली है केवल बिल्कुल असफल ही नहीं रही, प्रत्युत किशनगञ्ज में पाण्डों के विरुद्ध इनके हाथ से चार तोपें भी जाती रहीं। और इसी कारण उन्होंने रीड के पार्श्वों को भयप्रद स्थिति में डाल दिया। यदि यह समाचार सत्य है तो दीवान साहब ही सब से पहले भागे थे। झींद की पैदल सेना की कार्य-परायणता बहुत अच्छी रही। आज हमारी स्थिति में बहुत कुछ उन्नति हो गई है। मेगज़ीन पर अधिकार कर लिया गया है और अब हमारा अधिकार क्षेत्र काबुली दरवाज़े से लेकर नहर के बराबर उस सेना की चौकियों तक विस्तृत हो गया है, जो मेगज़ीन पर अधिकार जमाये हैं। शहर के इस सारे भाग को निवासियों ने ख़ाली कर दिया है। और इस कारण वहाँ से जो रुपया पैसा मिल सकेगा, अपने अधिकार में ले लिया जायगा। पाण्डों की एक पर्य्याप्त संख्या निहत हुई और मेरा अनुमान है कि बहुत ही कम लोग बचने पाये हैं। किन्तु किसी स्त्री को जान-बूझ कर यन्त्रणा नहीं दी गई।

कैम्प की रक्षा किशनगञ्ज की असफलता से एक सीमा तक भयग्रस्त हो गई थी। उस पर आक्रमण की आशङ्का थी, किन्तु हुआ नहीं। सलीमगढ़ और शाही महल पर गोले बरसाये जा रहे हैं। मेरी धारणा है कि पूर्ण सफलता निश्चित

है। हमारी सेना में आहत-निहत दोनों की संख्या आठ सौ से कम न होगी। निकलसन* के प्राणों का पूरा भय है। इनकी हानि की पूर्ति असम्भव है। करनल कैम्बल (५२वीं) भी अयोग्य हो गये हैं। सब करनल जो रह गये हैं, उनके ये नाम है--लॉङ्गफील्ड (८वीं) जोन्स (६१वीं) डेनिस (५२वीं)। जनरल विलसन अत्यन्त प्रोत्साहित किये गये हैं। मिस्टर कॉलविन ९वीं को स्वर्गवासी हुये।

मिस्टर रीड= ने सीनियर सिवीलियन होने की हैसियत से इस बात के सम्बन्ध में एक असाधारण सरकारी गज़ट प्रकाशित किया है कि उन्होंने उत्तर-पश्चिमीय सूबों का समस्त शासन अपने हाथ में ले लिया है। ब्रिटेनिया के पास इस प्रदेश के क्षेत्रफल के बराबर राज्य मौजूद है।

आपका

÷ एच० एच० ग्रेटहेड

---

* ब्रिगेडिर जनरल जॉन निकलसन २३ सितम्बर को स्वर्गवासी हुये।

= उत्तर-पश्चिमीय सूबों के साहब लेफ़्टिनेनेण्ट गवर्नर का नाम।

÷ हरवले ग्रेटहेड (इस पत्र के लेखक) हैज़े में ग्रस्त होने के कारण तीन दिन पश्चात् १६ सितम्बर को इसी रोग से मर गये।

खाँ ने होडल पलोल, शाहादरा में तहसीलदार और गुड़गाँव में बख्त खाँ ने कलक्टर नियुक्त किया था। मगर कोई आमदनी नहीं जमा हुई। शाहज़ादे भी अपनी सेना मालगुज़ारी जमा करने के लिए भेजने वाले थे, किन्तु भेजा नहीं। आगरा के फ़ैज़-अहमद व मिरज़ा ख़ैर सुलतान व मिरज़ा मुग़ल अदालत किया करते थे। शहर में एक कोतवाल और कई थानेदार मुक़र्रर हुए थे। थानेदारों के नाम याद नहीं। नवाब क़ुदरतुला के लड़के मुईनुद्दीन ख़ाँ पहिले कोतवाल बनाये गए। जब उन्होंने अत्याचार किये तो हटा दिये गए। इसके बाद ख्वाजा वाजिबुद्दीन की सिफ़ारिश से क़ाज़ी फ़ैज़ुल्ला बनाये गये फिर रायपुर के सय्यद मुबारिक बनाये गये। शाहज़ादों के सिवाय बख्तखाँ को भी दख़ल देने का अधिकार था। बादशाह ने कोतवाल व थानेदारों को हुक्म दिया था, कि बख्त ख़ाँ की आज्ञा मानें। सिपाही कहा करते थे कि जब मुल्क पर अधिकार हो जाएगा तो शाहज़ादों को विभिन्न प्रान्तों का सूबेदार बनायेंगे। दूसरे प्रबन्धों के लिए बख्त ख़ाँ ने आदमी नियुक्त किये थे। मेरठ के लिए कोई गवर्नर नहीं हुआ। वली-दाद ख़ाँ बुलन्दशहर के गवर्नर थे। वज़ीर ख़ाँ अवध के सूबेदार बनाये गये लेकिन वह दिल्ली से नहीं गये। अलीगढ़ के लिए कोई मुक़र्रर नहीं हुआ। रुहेलखण्ड के गवर्नर ख़ान बहादुर ख़ाँ थे। राजपूताना कोई नहीं गया। गुड़गाँव के लिए नियुक्ति हुई थी मगर कोई गया नहीं।

सेना के क्रम के सम्बन्ध में विशेष बात नहीं जानता।

बादशाह से इस सम्बन्ध में कभी नहीं पूछा गया। मेरे ख़याल में नीमच और नसीराबाद की सेनायें ही प्रायः अङ्गरेज़ों के मुक़ाबिले को जाती थीं। जो सेनाएँ हमला करना जानती थीं, वही भेजी जाती थीं। मिरज़ा मुग़ल के मकान पर ही सलाह हुआ करती थी कि आज किस सेना की बारी है। सिपाही जिस रेजिमेण्ट में चाहते थे, अपने मन से चले जाते थे। गौरीशङ्कर को इजाज़त दे दी गई थी कि सरकारी नौकरों को जमा करके नौकरी दे दें। लेकिन ऐसा हो नहीं सका, क्योंकि जो जगहें ख़ाली होतीं, उन पर किसी की नियुक्ति न होती। हर शख़्स अपना पहला स्थान चाहता था। मेरी समझ में सेना का पूरा प्रबन्ध था। सेना ने बख़्त ख़ाँ के गवर्नर-जनरल बनाने का विरोध किया और अर्ज़ी दी कि हम उनके मातहत न रहेंगे। उन्होंने लिखा कि बख़्त ख़ाँ सिर्फ़ तोपख़ाना का अफ़सर है वह गवर्नर-जनरल नहीं हो सकता। न इसने ख़ज़ाना लाकर दिया है और न मोरचा लड़ा है। फिर लिखा था कि मिरज़ा मुग़ल को इस पद पर बैठाया जावे। बादशाह ने यह अर्ज़ी बख़्त ख़ाँ को दे दी और उचित जवाब देने को कह दिया। उन्होंने उत्तर दिया कि सेना को ३ भागों में बाँटा जावे। मेरठ व दिल्ली की सेनाएँ मिला दी जावें—दूसरे जो सेनाएँ बख़्त ख़ाँ के साथ नीमच व सिरसा से आई हैं वह एक साथ रहें, तीसरे भाग में बाक़ी सभी सेना हो। मिरज़ा मुग़ल को यह सब बादशाह ने समझा दिया। बख़्त ख़ाँ के उत्थान का कारण यह था, कि जब वह आये तो उन्होंने बादशाह को

और झिन्द* के लिये जो पुरस्कार हमें निश्चित करने चाहिएँ, उन पर आप भी ज़रा विचार कर लीजिए। उन्हें अवश्य पुरस्कृत करना चाहिए। यदि वे स्वामि-भक्त न बने रहते तो हम कहीं के न रहते।

आपका विश्वसनीय,

जॉन लॉरेन्स

* नवाब साहब झज्झर और रईस-दादरी, जिन पर विप्लव करने का इल्ज़ाम था, की ज़ब्त की गई जागीरें इन तीनों में बाँट दी गई थीं।